ISSN: 2582-7162
शोध-पत्र

मलिन बस्तियों के किशोर एवं किशोरियों के शैक्षिक स्तर पर पारिवारिक परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन

डॉ.आभा शर्मा[1], शकुन्तला दर्जी[2]

[1]प्राचार्य, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]रिसर्च स्कॉलर, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर

Corresponding Author:

शकुन्तला दर्जी

रिसर्च स्कॉलर, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर

Received 2022 April 25, Modification 2022 April 28, Accepted 2022 April 30, Published - 2022 May 07

सारांश – कच्ची बस्ति की में रहने वाले किशोर बालक–बालिकाओं में शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन और उत्थान की अनेको समस्या बनी रहती है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में 600 किशोर विधार्थियों यादृच्छिक विधि से चयन किया गया दत संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण अरूण कुमार सिहं एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित 'समायोजन मापनी'' का प्रयोग किया गया व दत्त का विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण कर टी–परिक्षण सांख्यिकी का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये है। निष्कर्ष में पाया गया कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर– किशोरियों के पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर– किशोरियों के पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर पाया गया। कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर पाया गया।

विशिष्ट शब्द –1. शैक्षिक स्तर 2. पारिवारिक परिस्थिति

प्रस्तावना:- नगरों में उद्योग, व्यापार, शिक्षा, परिवहन, प्रशासन, चिकित्सा तथा मनोंरंजन आदि की सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक होने के कारण ग्रामीण अंचलों से रोजगार एवं अन्य सुविधाओं की प्रप्ति के उद्देश्य से बड़ी संख्या में व्यक्तियों का पलायन हुआ जिसके परिणाम स्वरूप नगरों की जनसंख्या बढ़ी तथा व्यक्तियों के आवास की समस्या उत्पन्न होने के कारण गन्दी बस्तियों का प्रादुर्भाव हुआ और गन्दी बस्तियों का विकास भी तेजी से बढ़ा जिसके परिणाम स्वरूप मानविय व्यवहार भी प्रभावित हुआ है,साथ ही वहां रहने वालों परिवारों, किशोर व किशोरियों के जीवन पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा जिसका अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया हैं।

अध्ययन का औचित्य मलिन बस्तियों में मूलः–भूत सुविधाओं का अभाव होने के कारण कई सारी समस्याएं उत्पन्न हो रही है, जो परिवार इन मलिन बस्तियों में रहते है उनकी इतनी भी क्षमता नही होती है कि वह उस जगह को छोड़कर एक स्वच्छ जगह में रहे। इस मजबूरी के कारण उनका जीवन कष्टों में गुजरता है। इन परिवारों मे रहने वाले किशोर को बचपन से ही एक असामाजिक वातावरण मिलता है जिससे उनका सामाजिक, बौद्धिक, संवेगिक विकास ठीक तरह से नही हो पाता है, परिवार का परिवेश भी पोषक नही होता है इसलिए शिक्षा का स्तर इन परिवारों में एवं किशोरो में न्यूनतम होता है और यह एक बड़ी वजह है जो इनके जीवन की अवस्था को उच्च नही कर पाती हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य ''मलिन बस्तियों के किशोर एवं किशोरियों के शैक्षिक स्तर पर पारिवारिक परिस्थितियों का प्रभाव'' शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले इस शोध कार्य का अपना एक विशिष्ट महत्व है। शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष निति निर्माताओं, शिक्षा शास्त्रियों, अभिभावकों, शिक्षण संस्थाओं के लिए विशेष लाभकारी रहेगां।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों पर उनकी पारिवारिक परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ–

1. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अनुसंधान विधि–प्रस्तावित शोध कार्य सर्वेक्षण विधि के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा । इस अध्ययन मे जनसंख्या जयपुर शहर में कच्ची बस्ती के निवासी किशोर एवं किशोरी होगें जो सरकारी व निजी विद्यालय में अध्ययनरत है।

न्यायदर्श–प्रस्तावित शोध कार्य जयपुर शहर के कच्ची बस्ती में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 11 व 12 के कुल विद्यार्थियों में से 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

पारिवारिक परिस्थितियाँ –स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

शोध की सांख्यिकी –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य के परिणाम प्राप्त करने के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन, एवं टी–परीक्षण ,साख्यिकी विधि का सहारा लिया है।

साहित्यावलोकन :–कुमार, जि. द्वारा लिखित शोध पत्र 'स्लम इन इंडिया : ए फोकस ऑन मेट्रोपोलिटन सिटीज' (Slum in India : A Focus on Metropolitan Cities) जिसका प्रकाशन 2014 में हुआ। फरहाना, एम. खा. एवं मननान, अ. का. द्वारा लिखित शोध पत्र 'सोशियो इकोनोमिक इंपेक्ट ऑफ रिजनल रूरल अर्बन माइग्रेशन : ए रिभिजिट ऑफ स्लम डयूलर्स ऑफ राजशाही सिटी कारपॉरेशन' (Socio economic impact of regional rural urban migration : A revisit of slum dwellers of rajshahi city corporation)जिसका प्रकाशन 2018 में हुआ। हर्षवर्धन, रा. एवं त्रिपाठी, वी. के. द्वारा लिखित शोध पत्र 'अर्बनाइजेशन एंड ग्रोथ आफ स्लम पॉपुलेशन इन झारखण्ड : ए स्पेशियल एनालसिस' (Urbanisation and growth of Slum population in Jharkhand : A Spatial Analysis)जिसका प्रकाशन 2015 में हुआ। ए सिद्दीकी, सेमा (2014) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक गुणों एवं गृह वातावरण के मध्य सम्बन्ध'' विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक गुणों एवं गृह–वातावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था।

सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना –

1. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– परीक्षण	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	150	105.00	5.66	2.04	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	150	103.14	8.70		

विश्लेषण–अवलोकन से ज्ञात होता है कि कच्ची बस्ती के सरकारी विद्यालय के किशोरों की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 105.00 एवं मानक विचलन 5.66 है तथा कच्ची बस्ती के सरकारी विद्यालय की किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 103.14 एवं मानक विचलन 8.70 है तथा स्वतंत्रता के अंश 298 पर टी–मान 2.04 प्राप्त हुआ। जो 0.05 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 से अधिक एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.59 से कम है।

व्याख्या– परिकल्पना दोनो स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

1. निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– परीक्षण	स्वीकृत/ अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय विद्यार्थी	150	114.00	7.09	5.89	दोनों स्तर पर अस्वीकत
निजी विद्यालय विद्यार्थी	150	109.13	5.93		

विश्लेषण –अवलोकन से ज्ञात होता है कि कच्ची बस्ती के निजी विद्यालय के किशोरों की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 114.00 एवं मानक विचलन 7.09 है तथा कच्ची बस्ती के निजी विद्यालय की किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 109.13 एवं मानक विचलन 5.93 है तथा स्वतंत्रता के अंश 298 पर टी–मान 5.89 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.59 से अधिक है।

व्याख्या– परिकल्पना'' दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

1. कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– परीक्षण	स्वीकृत/ अस्वीकृत
किशोर	300	109.00	7.74	4.80	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
किशोरियां	300	106.14	8.01		

विश्लेषण –अवलोकन से ज्ञात होता है कि कच्ची बस्ती के किशोर की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 109.00 एवं मानक विचलन 7.74 है तथा कच्ची बस्ती की किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों का मध्यमान 106.14 एवं मानक विचलन 8.01 है तथा स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी– मान 4.80 प्राप्त हुआ है। जों 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है।

व्याख्या– परिकल्पना'' दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

1. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर– किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर– किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर पाया गया।

3. कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों की पारिवारिक परिस्थितियों में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ सूची

1. भार्गव, महेश (2002) : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा, भार्गव बुक हाऊस।
2. अरोडा, रीता एवं मारवाह सुदेश (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन, चौडा रास्ता।
3. भटनागर, सुरेश (1993) : अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
4. ढोढ़ियाल सच्चिदानन्द (1982) : अनुसंधान का विधि शास्त्र, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

5. गुप्ता, एस.पी. (2001) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
6. लवनियां, एम. एम. (1989) : भारत में सामाजिक समस्याएँ, जयपुर, कॉलेज बुक डिपो।
7. मित्तल, संतोष एवं मित्तल, दीपशिखा (2002) : बाल मनोविज्ञान, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस लिमिटेड।
8. शुक्ला, सी. एस. (2009) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद, अनुभव पब्लिशिंग हाउस।